

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, चर्च और अंतिम चीजें, सत्र 8, चर्च का ऐतिहासिक धर्मशास्त्र, चर्च और चर्च, चर्च की विशेषताएं।

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा चर्च के सिद्धांतों और अंतिम बातों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 8 है, चर्च का ऐतिहासिक धर्मशास्त्र, चर्च और चर्च, चर्च की विशेषताएं।

ऐतिहासिक धर्मशास्त्र के साथ चर्च के सिद्धांत के हमारे अध्ययन को जारी रखते हुए, लेकिन पहले, आइए हम प्रार्थना करें।

दयालु पिता, आपकी सच्चाई के लिए धन्यवाद। बाइबल की शिक्षाओं के लिए धन्यवाद। चर्च के विद्यार्थियों के रूप में हमें प्रोत्साहित करें कि हम भी चर्च में प्रेमी, सेवक और कार्यकर्ता बनें, जैसा कि हम प्रार्थना करते हैं।

यीशु मसीह के द्वारा, जो चर्चों के प्रभु हैं, हम उनके नाम से प्रार्थना करते हैं, आमीन। ऑक्सबर्ग कन्फेशन, स्कॉट्स कन्फेशन और बेल्जिक कन्फेशन के बाद, यदि आप चाहें तो हमारा अंतिम ऐतिहासिक धर्मशास्त्र संकेत-स्तंभ 1646 का वेस्टमिंस्टर कन्फेशन है, जो अभी भी प्रेस्बिटेरियन और विश्वास करने वाले चर्चों का मानक है। अध्याय 25 चर्च पर है।

इसमें छह कथन हैं। पहला, कैथोलिक या सार्वभौमिक चर्च, जो अदृश्य है, चुने हुए लोगों की पूरी संख्या से बना है। ऑगस्टीनियन चर्च को पूर्वनिर्धारित के रूप में परिभाषित करता है, जो मसीह के अधीन एक में एकत्र हुए हैं, हैं, या एकत्र किए जाएंगे, जो इसके प्रमुख हैं।

और यह जीवनसाथी, शरीर और उसकी परिपूर्णता है जो सभी को भर देती है। कैथोलिक का मतलब सार्वभौमिक है, रोमन का मतलब नहीं। यह अदृश्य चर्च, सभी उम्र के और दुनिया भर में हर जगह परमेश्वर के सभी लोगों की पुष्टि करता है।

यह चर्च को चुनाव, ईश्वर की सर्वोच्च कृपा में आधार प्रदान करता है। एक में एकत्रित किया जाएगा, एकत्रित होना ईश्वर द्वारा वास्तव में सुसमाचार में लोगों को अपने पास बुलाए जाने की बात करता है, जॉन की भाषा के सुसमाचार का उपयोग करते हुए, लोग मसीह के पास आते हैं। पिता लोगों को मसीह के पास खींचता है ताकि वे मसीह के पास आएँ या उस पर विश्वास करें।

मसीह के सिर और चर्च के नीचे पति-पत्नी, दुल्हन, शरीर, उसकी परिपूर्णता है जो कुलुस्सियों से लेकर इफिसियों तक सभी में सब कुछ भर देती है, क्षमा करें। दृश्यमान चर्च, इसलिए अनुच्छेद 1, अदृश्य चर्च, दृश्यमान चर्च जो सुसमाचार के तहत कैथोलिक या सार्वभौमिक भी है, कानून के तहत पहले की तरह एक राष्ट्र तक सीमित नहीं है, दृश्यमान चर्च जो सुसमाचार के तहत कैथोलिक या सार्वभौमिक भी है, दुनिया भर के उन सभी लोगों से मिलकर बना है जो सच्चे धर्म को मानते हैं, चर्च के काम और उनके बच्चों के लिए एक सामग्री है, परिवार में एक वाचा संबंधी

धर्मशास्त्र है जैसा कि स्कॉट के कबूलनामे में है और यह प्रभु यीशु मसीह का राज्य है, भगवान का घर और परिवार है जिसमें से मुक्ति की कोई सामान्य संभावना नहीं है। मैं कहूंगा कि चर्च भगवान के राज्य के समान नहीं है।

ईश्वर का राज्य एक बड़ी इकाई है जिसका चर्च एक उपसमूह है। ईश्वर का राज्य सब कुछ पर ईश्वर का शासन है, और शायद उनका मतलब उस संकीर्ण अर्थ में अपने लोगों पर उसका शासन है। वे करीब हैं, लेकिन फिर भी, मैं इस पर आपत्ति नहीं करूंगा, मैं स्पष्ट करूंगा कि चर्च एक ही नहीं है, राज्य के समान है। यह ईश्वर के राज्य की एक अभिव्यक्ति है, और साइप्रस के लोगों पर ध्यान दें, साइप्रियन के विचार के संदर्भ, चर्च के बाहर कोई मोक्ष नहीं है, वे योग्य हैं, चर्च से बाहर मोक्ष की कोई सामान्य संभावना नहीं है।

चर्च का वर्णन करने का एक और तरीका है ईश्वर का परिवार। ईश्वर का घर, वेस्टमिंस्टर 25:3, इस कैथोलिक दृश्यमान चर्च, सार्वभौमिक दृश्यमान चर्च को, मसीह ने इस जीवन में संतों को इकट्ठा करने और दुनिया के अंत तक परिपूर्ण करने के लिए ईश्वर की सेवकाई, भविष्यवाणियाँ और अध्यादेश दिए हैं, और अपनी उपस्थिति और आत्मा के द्वारा, अपने वादे के अनुसार, उन्हें उनके लिए प्रभावी बनाते हैं। मसीह ने तीन चीजें दी हैं: सेवकाई, जो वास्तव में चर्च की सेवकाई है, जिसमें पादरी सेवकाई, उपदेश, आत्माओं का इलाज, और इसी तरह की अन्य चीजें शामिल होंगी।

1 पतरस 4 में ईश्वर के वचनों की बात की गई है, उस अभिव्यक्ति का उपयोग किया गया है, मैं आभारी हूँ कि ESV ने इसे पुनर्स्थापित किया है, मैं यह नहीं कहना चाहता कि यह गलत है। आह, हम वहाँ हैं, हाँ, जो कोई भी बोलता है, 1 पतरस 4, ऐसा करो जैसे कि वह ईश्वर की वाणी बोलता है। इसका अर्थ है ईश्वर के वचन, और यह वचन की सेवकाई में बहुत गंभीरता जोड़ता है क्योंकि वचन के मंत्री स्वयं ईश्वर के कथनों को संभाल रहे हैं। मसीह ने, इस सार्वभौमिक दृश्यमान चर्च को, वचन की सेवकाई, और उससे भी अधिक, वाणी, ईश्वर का वचन, और ईश्वर के अध्यादेश, प्रभु के भोज में बपतिस्मा, दो उद्देश्यों के लिए दिया है: संतों का एकत्र होना और उन्हें परिपूर्ण बनाना।

एकत्रित होना उन्हें मसीह के पास लाना है; परिपूर्ण बनाना कुलुस्सियों 1 की तरह है; पौलुस का लक्ष्य सभी को मसीह यीशु में परिपूर्ण और परिपक्व के रूप में प्रस्तुत करना है। इस जीवन में, दुनिया के अंत तक, चर्च चलता रहेगा। और परमेश्वर न केवल ये चीजें देता है, बल्कि वह अपनी उपस्थिति और आत्मा के द्वारा, अपने वादे के अनुसार, उन्हें प्रभावी बनाता है।

इसलिए, वह उन उपहारों को देता है, और वह उनके माध्यम से अपने परिणामों को प्राप्त करने, एकत्रित करने और परिपूर्ण करने के लिए कार्य करता है। 25, अनुच्छेद 4, यह कैथोलिक चर्च कभी अधिक, कभी कम दिखाई देता है, और विशेष चर्च, जो इसके सदस्य हैं, अधिक या कम शुद्ध हैं, इस बात के अनुसार कि सुसमाचार का सिद्धांत सिखाया और अपनाया जाता है, अध्यादेश प्रशासित किए जाते हैं, और सार्वजनिक पूजा कमोबेश उनमें शुद्ध रूप से की जाती है। फिर से, यह चर्च के लिए चिह्न शब्द का उपयोग नहीं करता है, लेकिन इसका तात्पर्य सुसमाचार

के सिद्धांत को सिखाया जाना है, और न केवल सिखाया जाता है, बल्कि विश्वास किया जाता है, और अध्यादेश प्रशासित किए जाते हैं, और परिणाम सार्वजनिक पूजा है, कमोबेश शुद्ध रूप से।

चर्च कमोबेश शुद्ध हैं। सिद्धांत, अध्यादेश और पूजा कमोबेश शुद्ध रूप से होती है। वे क्या कर रहे हैं? वे एक परिपूर्ण चर्च की किसी भी धारणा को नकार रहे हैं।

खैर, अगला लेख इसे स्पष्ट करता है। अनुच्छेद 5 में कहा गया है कि स्वर्ग के नीचे सबसे शुद्ध चर्च मिश्रण के अधीन हैं, और सेंट ऑगस्टीन के अनुसार, चर्च विश्वासियों और अविश्वासियों का एक मिश्रित निकाय है। स्वर्ग के नीचे सबसे शुद्ध चर्च मिश्रण और त्रुटि दोनों के अधीन हैं।

चर्चों में गलतियाँ होती हैं, हर चर्च में गलतियाँ होती हैं, और हर ईसाई में गलतियाँ होती हैं, जैसा कि हम देखेंगे जब हम चर्च के चिह्नों और फिर चर्चीय पृथक्करण के बारे में बात करेंगे। मैं सिर्फ गलतियों की डिग्री के बारे में बात करूँगा, और मेरे दो बिंदुओं में से एक यह है कि सिस्टम में बड़ी गलतियों को भी विधर्म से अलग करना चाहिए। विधर्मी लोगों को धिक्कार है।

मुझे तब बहुत गुस्सा आता है जब मेरे कैल्विनिस्ट दोस्त आर्मीनियन को विधर्मी कहते हैं और आर्मीनियन को विधर्मी कहते हैं। नहीं, वे मसीह में साथी विश्वासी हैं। अब, वे दोनों सोचते हैं कि दूसरा व्यक्ति प्रणालीगत या व्यवस्थित त्रुटि का दोषी है, और यह एक या दूसरे तरीके से सच होगा, लेकिन वे विधर्मी नहीं हैं।

चर्च संबंधी अलगाव और त्रुटि के बारे में मेरी चर्चा का दूसरा बिंदु हमें विनम्र बनाना और यह पहचानना है कि कोई भी व्यक्ति सब कुछ एक साथ नहीं कर सकता। कोई भी व्यक्ति बाइबल की हर आयत को ठीक से नहीं समझ सकता, और किसी आयत की गलत व्याख्या करना पाप है। इसलिए, हम सभी में, हम सभी में त्रुटियाँ हैं।

स्वर्ग के नीचे सबसे शुद्ध चर्च मिश्रण और त्रुटि दोनों के अधीन हैं, और कुछ इतने पतित हो गए हैं कि वे मसीह के चर्च नहीं बल्कि शैतान के आराधनालय बन गए हैं। यह रहस्योद्घाटन 2:9 से है, जो दूसरे चर्च को लिखे गए पत्र हैं। शैतान के आराधनालय का मतलब है कि कोई भी सच्चा चर्च नहीं है।

यह ऐसी बात नहीं है जिसे हम इधर-उधर फेंकते हैं, हालाँकि मेरे अनुमान में, आज हमारी संस्कृति में चर्च वास्तव में शैतान के आराधनालय हैं। क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि वे बपतिस्मा पर आपसे असहमत हैं? नहीं। चर्च सरकार? नहीं।

ज़मीन जायदाद? नहीं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे सुसमाचार का प्रचार नहीं करते, या वे जानबूझकर सुसमाचार पर विश्वास नहीं करते। फिर भी, पृथ्वी पर हमेशा एक चर्च होगा जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार उसकी आराधना करेगा।

मैं एक प्रतिध्वनि सुनता हूँ; मैं अपना चर्च बनाऊँगा, और नरक के द्वार इसे रोक नहीं पाएँगे। लड़के, यह इन सुधार संबंधी दस्तावेजों में भी चलता है, यहाँ तक कि उस जानबूझकर उद्धरण के साथ भी। यीशु अपने चर्च की शाश्वतता की गारंटी देता है।

और, बेशक, आपको पोप को जल्दी से जल्दी झटका देना होगा। अनुच्छेद 6, प्रभु यीशु मसीह के अलावा चर्च का कोई और मुखिया नहीं है, न ही रोम का पोप किसी भी मायने में इसका मुखिया हो सकता है। खैर, ऐतिहासिक धर्मशास्त्र परमेश्वर के वचन के लिए प्रतिस्थापित नहीं है, लेकिन यह परमेश्वर के वचन की हमारी समझ को समृद्ध करता है, और हम इसके लिए बेहतर हैं।

यह हमें कुछ मुद्दों पर सोचने के लिए मजबूर करता है, और धर्मशास्त्र को व्याख्या पर आधारित होना चाहिए, लेकिन धर्मशास्त्र व्याख्या को भी सूचित करता है। हम बाइबल में जो विचार रखते हैं, उन्हें हम देखते हैं, और कई बार, सही भी है। चर्च और चर्चों की एक वास्तविक संक्षिप्त चर्चा।

वास्तव में चर्च के लिए नए नियम के शब्द, एक्लेसिया के साथ काम करना। नए नियम में ग्रीक में चर्च, एक्लेसिया शब्द, चर्च को उसके कई रूपों में संदर्भित करता है। यही इसका पूरा मुद्दा है।

एक्लेसिया चर्च को उसके अनेक रूपों में संदर्भित करता है। और मैं बस इसका सारांश दूंगा। मैं एक सिंहावलोकन दूंगा।

यह चर्चों को संदर्भित करता है, अर्थात् घरों में। हाउस चर्च चर्च हैं। यह चर्चों को संदर्भित करता है, अर्थात् शहर भर के चर्च।

उदाहरण के लिए, हाउस चर्चों का कुल योग, जिसका अर्थ है कि नए नियम के शहर में, इफिसुस में चर्च कहा जा सकता है। चर्च, रोमन प्रांतों में चर्चों का कुल योग, प्रांतीय चर्च, को भी यही कहा जाता है। चर्च।

यरूशलेम काउंटी में प्रेरितों के काम 15 में वर्णित सार्वभौमिक चर्च अभी भी एक आश्चर्य है। इसे चर्च कहा जाता है। नए नियम में चर्च का अर्थ चर्च के कई रूपों से है।

वास्तव में, कभी-कभी यह अदृश्य चर्च को संदर्भित करता है। घर के चर्च। 1 कुरिन्थियों 16, 19, पॉल कहता है, अक्विला और प्रिस्किल्ला आपको प्रभु में गर्मजोशी से नमस्कार भेजते हैं, साथ ही उनके घर में मिलने वाली कलीसिया भी।

1 कुरिन्थियों 16, 19 में, अक्विला और प्रिस्किल्ला के पास एक गृह कलीसिया थी जो उनके घर में मिलती थी। पौलुस हमारे प्रिय मित्र और सहकर्मी को, हमारी बहन अथिया को, हमारे साथी सैनिक अर्खिप्पुस को, और आपके घर में मिलने वाली कलीसिया को घर छोड़कर जाने के बारे में लिखता है। एक और दो।

वहाँ से निकलकर, उसके घर में एक गृह कलीसिया की बैठक हुई। नए नियम के लेखक कभी-कभी चर्च शब्द का उपयोग शहर भर के चर्चों और महानगरीय चर्चों को इंगित करने के लिए करते हैं। इसलिए प्रेरितों के काम 8:1 में हम पढ़ते हैं, उस दिन यरूशलेम में कलीसिया के विरुद्ध एक गंभीर उत्पीड़न शुरू हो गया।

क्या यह एक बड़ी इकाई है? खैर, एक अर्थ में, यह है, लेकिन नहीं, यह कई गृह कलीसियाओं से बना है। लेकिन आप उन्हें, संपूर्ण रूप से, यरूशलेम में कलीसिया के रूप में संदर्भित कर सकते हैं। इसका मतलब है, यह शक्ति का नहीं, बल्कि सामान्य पहचान का सिद्धांत है।

चाहे किसी एक विशेष चर्च का उल्लेख किया जाए या सभी चर्चों का, यह सभी चर्चों का उल्लेख है। प्रेरितों के काम 20 में, हम पढ़ते हैं, अब मिलिटस से पौलुस ने इफिसुस को भेजा और चर्च के प्राचीनों को बुलाया। ये इफिसुस शहर में घर के चर्च हैं।

उन्हें चर्च कहा जाता है। रोमी प्रांत में स्थित चर्चों को, जिन्हें आप प्रांतीय चर्च कह सकते हैं, सामूहिक रूप से चर्च कहा जाता है। प्रेरितों के काम 9:31.

इस प्रकार, सारे यहूदिया, गलील और सामरिया में कलीसिया को शांति मिली और वह सुदृढ़ हुई। प्रेरितों के काम 9:31. 1 कुरिन्थियों 16:19, एशिया की कलीसियाओं की ओर से तुम्हें नमस्कार।

यह कई शहरों में कई चर्च हैं। इसलिए, हम छोटी से बड़ी संस्थाओं की ओर बढ़ रहे हैं, और मुद्दा यह है कि इन सभी संस्थाओं को चर्च कहा जा सकता है, और कहा जाता है। कुछ अवसरों पर, चर्च, एक्लेसिया शब्द, पूरे विश्वव्यापी चर्च को संदर्भित करता है।

प्रेरितों के काम 15:22. तब प्रेरितों और प्राचीनों ने, अर्थात् पूरी कलीसिया ने, यह निर्णय किया कि उन लोगों को चुनें जो उनके मध्य में थे, और उन्हें पौलुस और बरनबास, यहूदा (जो बरअब्बा कहलाता है), और सीलास के साथ जो भाइयों में मुख्य पुरुष थे, अन्ताकिया में भेजें। प्रेरितों के काम 15:22.

संपूर्ण चर्च। कभी-कभी, चर्चों का उपयोग उस अदृश्य या सार्वभौमिक चर्च को दर्शाने के लिए किया जाता है, जो हर जगह सभी विश्वासियों की एकता की बात करता है, चाहे वे जीवित हों या मृत। इफिसियों 1:22 को सुनें।

और परमेश्वर ने सब कुछ उसके पैरों तले, यीशु के पैरों तले कर दिया, और उसे कलीसिया के लिए सब कुछ का मुखिया नियुक्त किया। उसने कहा कि उसकी कलीसियाओं में पृथ्वी पर उग्रवादी कलीसिया, विजयी कलीसिया और वे लोग शामिल हैं जो अपने इनाम की ओर बढ़ चुके हैं। इफिसियों 1:22.

इफिसियों 3:20 और 21. अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी बिनती और समझ से कहीं बढ़कर काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है, कि कलीसिया में, और मसीह यीशु में, पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग महिमा होती रहे। आमीन।

इफिसियों 3:20, 21. या फिर इफिसियों 5:27. मसीह ने ऐसा ही किया।

उसने अपने आप को अपनी कलीसिया को पवित्र करने के लिए दे दिया। उसने ऐसा इसलिए किया ताकि कलीसिया को निष्कलंक, न झुर्रीदार, न ऐसी किसी चीज़ के साथ, बल्कि पवित्र और निर्दोष रूप में अपने सामने पेश करे। इफिसियों 5:27.

इस अर्थ में, चर्च किसी एक स्थानीय चर्च संप्रदाय या संघ के समान नहीं है। यह मनुष्यों के लिए पूरी तरह से दृश्यमान नहीं है और सभी स्थानों और सभी समयों के सभी विश्वासियों के योग को संदर्भित करता है। नए नियम में अधिकांश समय, चर्च शब्द स्थानीय, दृश्यमान चर्च को संदर्भित करता है, जो परमेश्वर के लोगों का एकत्रित समुदाय है जो त्रिएक परमेश्वर की आराधना करने, एक दूसरे से प्रेम करने और दुनिया के लिए गवाही देने के लिए एक साथ वाचाबद्ध हैं।

प्रेरितों के काम 14:23. प्रेरितों के काम 16:5. इस प्रकार कलीसियाएँ विश्वास में दृढ़ होती गईं और उनकी संख्या प्रतिदिन बढ़ती गई।

यह चर्च का प्रमुख उपयोग और बाइबिल का जोर है। चर्च मसीह और एक दूसरे के प्रति समर्पित विश्वासियों का एक स्थानीय समूह है, जो परमेश्वर की महिमा करने और उसके मिशन की सेवा करने के लिए एक साथ काम करते हैं। स्थानीय चर्च संगति और आराधना का प्राथमिक केंद्र है।

यह वह प्राथमिक साधन है जिसका उपयोग परमेश्वर सुसमाचार प्रचार, शिष्य बनाने और सेवकाई के लिए करता है। यही कारण है कि पौलुस स्थानीय कलीसियाएँ स्थापित करता है, उनके लिए अगुआ नियुक्त करता है, उनके पास प्रतिनिधि भेजता है, और उन्हें पत्र लिखता है। स्थानीय कलीसियाएँ उसके धर्मशास्त्र में महत्वपूर्ण हैं, और वे उसकी मिशन रणनीति की कुंजी हैं।

स्थानीय चर्च में, हम एक साथ इकट्ठा होते हैं, एक साथ बढ़ते हैं, एक साथ सेवा करते हैं, एक साथ पूजा करते हैं, एक साथ गवाही देते हैं। बेशक, इसे अदृश्य चर्च के प्रकाश में देखा जाना चाहिए। तो, घरेलू चर्च, महानगरीय या शहरव्यापी चर्च, प्रांतीय चर्च, संपूर्ण विश्वव्यापी चर्च और अदृश्य चर्च भी हैं, जिसमें सभी समय के सभी विश्वासी शामिल हैं।

अब हम चर्च की विशेषताओं के महत्वपूर्ण विषय पर आते हैं। हमारे अगले दो विषय हैं विशेषताएँ और चिह्न। इनकी तुलना की जानी चाहिए।

विशेषताएँ पितृसत्तात्मक जोर हैं। वे प्रारंभिक चर्च से आते हैं। विशेषताएँ पितृसत्तात्मक हैं।

ये चिह्न सुधारात्मक हैं। ये गुण परिभाषात्मक हैं। ये परिभाषित करने वाले हैं।

वे चर्च को परिभाषित करते हैं। चिह्न सत्य को असत्य से अलग करते हैं। चर्च की विशेषताएँ, चार संज्ञाएँ, कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद के विशेषणों से आती हैं, जैसा कि हमने कई बार कहा है।

ऐतिहासिक भेद। चिह्न सुधारात्मक हैं। गुण पितृसत्तात्मक हैं।

उद्देश्य। चिह्न विवादास्पद हैं, जो सच्चे चर्चों को झूठे चर्चों से अलग करते हैं। विशेषताएँ परिभाषित करने वाली और स्वीकारोक्तिपूर्ण हैं।

381 में कॉन्स्टेंटिनोपल की परिषद के पंथ ने कहा कि हम एक पवित्र कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च में विश्वास करते हैं। इस प्रकार चर्च के गुण हैं, एक से हमें एकता मिलती है। पवित्र से हमें पवित्रता या पवित्रता मिलती है।

कैथोलिक से हमें कैथोलिकता मिलती है। और प्रेरितिक से हमें प्रेरितिकता मिलती है - चर्च की एकता।

चर्च एक है क्योंकि विश्वासी एक ही प्रभु यीशु मसीह में एकजुट हो गए हैं और उन्हें इस शाश्वत आध्यात्मिक एकता को प्रत्यक्ष रूप से बढ़ावा देना है। यूहन्ना 17, आयत 20 से 23 में, हमें इस संबंध में यीशु के महत्वपूर्ण शब्द मिलते हैं। वास्तव में, मुझे यूहन्ना 17 में चर्च की चार विशेषताओं में से तीन मिलती हैं।

दिलचस्प है। अपने चर्च के लिए यीशु की प्रार्थना में, वह एकता, पवित्रता और कैथोलिकता के लिए प्रार्थना करता है; यहाँ तक कि प्रेरितत्व भी निहित हो सकता है। आपका वचन सत्य है।

दिलचस्प। यूहन्ना 17:20 से 23 तक, यीशु ने कहा, मैं केवल यही नहीं माँगता, बल्कि वे भी जो उनके वचन के द्वारा, अर्थात् प्रेरितों के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों। जैसे तू, हे पिता, मुझ में है और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों, कि जगत विश्वास करे कि तू ने मुझे भेजा है।

जो महिमा तूने मुझे दी है, वही मैंने उन्हें भी दी है, ताकि वे एक हों, जैसे हम एक हैं। मैं उनमें हूँ और तू मुझमें है, ताकि वे पूरी तरह से एक हो जाएँ, ताकि दुनिया जान सके कि तूने मुझे भेजा है और तू उनसे प्रेम करता है, जैसे तूने मुझसे प्रेम किया। चर्च की एकता जातीयता, सामाजिक स्थिति या लिंग के सभी सांसारिक भेदों से परे है।

पॉल गलातियों 3 में चर्च की एकता पर स्पष्ट रूप से बात करता है, और गलातियों 3 में यही बात ध्यान में रखी गई है, न कि पुरुषों और महिलाओं की समानता पर, जैसा कि बाइबल सिखाती है, बल्कि यहाँ जोर वास्तव में एकता पर है। गलातियों 3:27 और 28, क्योंकि मसीह यीशु में, पद 26, तुम सब विश्वास के द्वारा परमेश्वर की सन्तान हो, क्योंकि तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहन लिया है।

न तो कोई यहूदी है, न यूनानी, न कोई दास है, न स्वतंत्र, न कोई नर है, न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो। और यदि तुम मसीह के हो, तो तुम अब्राहम की संतान हो, वादे के अनुसार वारिस हो। आदम का पाप अव्यवस्था और फूट लाता है, लेकिन परमेश्वर की योजना मसीह में ब्रह्मांडीय एकता की पूर्ण पैमाने पर बहाली के माध्यम से खुद को महिमामंडित करना है।

इफिसियों की पुस्तक हमें बताती है कि परमेश्वर सभी चीजों को मसीह में एक साथ लाकर ऐसा करेगा। परमेश्वर की नई सृष्टि, जिसमें चर्च भी शामिल है, ब्रह्मांडीय एकता के लिए उसकी योजना के सभी तीन क्षेत्रों से संबंधित है। सबसे पहले, चर्च उन विश्वासियों से बना है जो मसीह के उद्धार

कार्य के माध्यम से परमेश्वर से अलग हो गए थे और पवित्र आत्मा द्वारा उसके साथ एकजुट हो गए हैं।

दूसरा, कलीसिया भी परमेश्वर के लोग हैं जो एक दूसरे से मेल-मिलाप करते हैं। पहला बिंदु इफिसियों 2:1 से 10 तक था। दूसरा बिंदु, इफिसियों 2:11 से 22।

तीसरा, कलीसिया परमेश्वर की ब्रह्मांडीय मेलमिलाप की योजना का प्रदर्शन है। इफिसियों 3:8 से 11. परमेश्वर ने कलीसिया को स्वयं को प्रदर्शित करने और महिमा देने के लिए बनाया है।

इफिसियों 2 :7 से 10, 3:10. चर्च की एकता यह घोषित करती है कि एक शरीर और एक आत्मा है, एक आशा है, एक प्रभु है, एक विश्वास है, एक बपतिस्मा है, एक ईश्वर और सबका पिता है जो सब से ऊपर है और सब में है। ये ईसाई चर्च की सात एकताएँ हैं।

वे वस्तुनिष्ठ हैं। कोई भी उन्हें नष्ट नहीं कर सकता। चाहे चर्च को कितना भी सताया जाए या वह कितना भी भ्रष्ट हो जाए, पवित्र त्रिमूर्ति अभी भी पवित्र त्रिमूर्ति है।

उदाहरण के लिए, चर्च की एकता एक वास्तविकता है क्योंकि परमेश्वर ने एक नए लोगों को बनाया है। मसीह के साथ एक और एक दूसरे के साथ एक। इफिसियों 2:11 से 22।

एकता संपूर्ण या सार्वभौमिक चर्च की पहचान है। यहूदियों और अन्यजातियों का एक नए लोगों में मेलमिलाप वैश्विक है और इसलिए एक सार्वभौमिक चर्च में विश्वास की आवश्यकता है। एकता स्थानीय चर्च की भी पहचान है।

यहूदियों और अन्यजातियों का मेलमिलाप परमेश्वर के ब्रह्मांडीय एकता के उद्देश्यों को दर्शाता है और इसके लिए चर्च की दृश्यता और इस प्रकार, स्थानीय चर्च की आवश्यकता होती है। चर्च की एकता एक वर्तमान वास्तविकता और एक चिरस्थायी प्रयास दोनों है। इसका मतलब है कि चर्च की एकता राज्य के पहले से ही और अभी तक नहीं होने की गवाही देती है।

इस प्रकार पौलुस चर्च से विशिष्ट व्यवहार अपनाने का आग्रह करता है और चर्च की पहचान की धार्मिक वास्तविकताओं पर इन उपदेशों को आधारित करता है। एकता प्राप्त करना कठिन है। इसलिए चर्च की उन सात उद्देश्यपूर्ण एकताओं को बताने से पहले, वह कहता है कि चर्च को पूरी विनम्रता और नम्रता के साथ एकता में रहना चाहिए, धैर्य के साथ, प्रेम में एक दूसरे के साथ सहन करना चाहिए, इफिसियों 2, 3, शांति के बंधन में आत्मा की एकता को बनाए रखने के लिए उत्सुक होना चाहिए।

अगला शब्द, एक शरीर, एक आत्मा, इत्यादि है। सात एकता से ठीक पहले व्यक्तिपरक एकता का आह्वान है। शांति के बंधन में आत्मा की एकता बनाए रखने के लिए उत्सुक रहें क्योंकि एकता के सात वस्तुनिष्ठ आधार हैं जिन्हें व्यक्तिपरक एकता में जीना है।

चर्च की एकता एक ईश्वर, एक प्रभु, एक आत्मा, इत्यादि की धार्मिक नींव पर बनी है, चार से छह। पौलुस एक दूसरे से एकजुट होने पर जोर देता है, इसका मतलब है कि हमें सच बोलना चाहिए,

क्रोध नहीं पालना चाहिए, उदारता से देना चाहिए, हमें चोट पहुँचाने वाले शब्दों से बचना चाहिए, दूसरों को प्रोत्साहित करना चाहिए, और आत्मा को दुखी नहीं करना चाहिए, 25 से 30। वह एकता का आग्रह करता है, सभी कड़वाहट, क्रोध, क्रोध, चिल्लाना, और निंदा, साथ ही सभी द्वेष को दूर करने पर जोर देता है।

मसीहियों को एक दूसरे के प्रति दयालु और करुणामय होना चाहिए, एक दूसरे को क्षमा करना चाहिए। चर्च की एकता का सार प्रेम है, 5:1 और 2। चर्च की एकता एक महत्वपूर्ण सिद्धांत और एक व्यावहारिक चुनौती है। हम अक्सर भूल जाते हैं कि एकता एक सिद्धांत है।

ईसाई चर्च सुसमाचार में और उसके माध्यम से बनाया गया है। एकता उन लोगों द्वारा तोड़ी जाती है जो सुसमाचार, मसीह के ईश्वरत्व या अन्य मूल सत्यों को अस्वीकार करते हैं। गलातियों 1:6 से 10 देखें।

चर्च की एकता का सिद्धांत चर्च के व्यवहार को आकार देता है। इफिसियों 4:1 से 6 और 17 से 32। संस्कृति और परंपरा पर मतभेदों के बीच भी चर्च की एकता बनी रह सकती है।

यह बात आश्चर्यजनक है कि पौलुस ने रोम के चर्च से कभी भी भोजन के नियमों और रीति-रिवाजों पर सहमत होने का आग्रह नहीं किया। इसके बजाय, वह उनसे ऐसे मतभेदों के बावजूद एक स्वर से परमेश्वर की आराधना करने का आग्रह करता है। रोमियों 15:5 से 7. चर्च की एकता का दिन-प्रतिदिन का अभ्यास पूरे चर्च और व्यक्तिगत विश्वासियों के साथ हमारे रिश्ते में दिखाया गया है।

बाद में पौलुस दिखाता है कि कैसे चर्च की पवित्रता और आराधना परमेश्वर और चर्च की एकता को प्रदर्शित करती है। एकता हमारे ईसाई परिवार के घरेलू रिश्तों में भी प्रदर्शित होती है, जिसमें पति और पत्नी, माता-पिता और बच्चे, और यहाँ तक कि स्वामी और दास सेवक भी शामिल हैं। चर्च की एकता इसकी ऐतिहासिक विशेषताओं में से एक है।

चर्च एक है, और हमें एकता को बढ़ावा देने के लिए सावधान रहना चाहिए। व्यावहारिक स्तर पर यह मुश्किल हो सकता है, खासकर कुछ लोगों के लिए विश्वास की प्रबलता के साथ इसे जोड़ना मुश्किल है। और मैं सेमिनेरियन से पूछना पसंद करता था, मैं एक वाचा धर्मशास्त्री हूँ।

डिस्पेंसेशनलिस्ट्स के साथ मेरी क्या समानता है? पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा, सुसमाचार। मेरे और उनके बीच जो समानता नहीं है, उससे कहीं ज़्यादा समानता है। मैं एक आश्वस्त पाँच सूत्री कैल्विनिस्ट हूँ, एक ज़बरदस्त सुधारक।

आर्मिनियन के साथ मेरा क्या संबंध है ? ईश्वर की कृपा, प्रभु यीशु में विश्वास, आत्मा की एकता, शांति का बंधन। इसका मतलब यह नहीं है कि ये चीजें मेरे लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं। वे मेरे लिए महत्वपूर्ण हैं, और मैंने उन पर किताबें लिखी हैं।

लेकिन बाइबल में चर्च की एकता का सिद्धांत है। यह भी एक सिद्धांत है और हमें इसे जीना चाहिए, भले ही हम कुछ सच्चाइयों पर दूसरों से ज़्यादा ज़ोर दें। फिर से, धार्मिक त्रुटि की चर्चा की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

हम मसीह में भाई-बहनों के रूप में विधर्मियों और विधर्मियों को स्वीकार नहीं करते हैं, लेकिन हम मसीह में भाई-बहनों को मसीह में भाई-बहनों के रूप में स्वीकार करते हैं। और हम मुद्दों पर असहमत हो सकते हैं, यहां तक कि उन मुद्दों पर भी जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं, जबकि दूसरों को अस्वीकार नहीं करते हैं। एक दूसरे को स्वीकार करें, रोमियों 15, जैसे परमेश्वर ने आपको स्वीकार किया है।

यह एक महत्वपूर्ण बिंदु है। चर्च न केवल एक है, बल्कि चर्च की एकता और पवित्रता भी है। पवित्रता चर्च का एक और गुण है।

पवित्रीकरण या पवित्रता के रूप में मुक्ति प्रारंभिक, प्रगतिशील और अंतिम है। प्रारंभिक पवित्रीकरण होता है जो संतत्व उत्पन्न करता है। प्रगतिशील या आजीवन पवित्रीकरण होता है, जिसका अर्थ है कि परमेश्वर अपने संतों के जीवन में व्यावहारिक पवित्रता का निर्माण करता है।

और अंतिम या संपूर्ण पवित्रीकरण है जिसमें परमेश्वर अपने व्यक्तित्व को पूर्ण पवित्रता में पुष्ट करेगा। आरंभिक पवित्रीकरण पवित्र आत्मा का कार्य है जो पापियों को एक बार और हमेशा के लिए परमेश्वर और पवित्रता के लिए अलग करता है। 1 कुरिन्थियों 6:11. इसे निश्चित पवित्रीकरण भी कहा जाता है क्योंकि परमेश्वर आरंभिक रूप से पवित्र किए गए लोगों को अपने संतों के रूप में परिभाषित करता है।

1 कुरिन्थियों 1:2. कुरिन्थियों के लोग अपनी सारी समस्याओं, संघर्षों और पापों के बावजूद संत हैं। वे संत हैं। इससे हमें प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

प्रगतिशील या ईसाई पवित्रीकरण परमेश्वर द्वारा अपने शरीर, चर्च के सदस्यों के जीवन में वास्तविक पवित्रता का कार्य करना है, उन्हें पाप से अधिक से अधिक दूर करके अपनी ओर मोड़ना। 1 थिस्सलुनीकियों 4.3-5। आत्मा वचन, चर्च और प्रार्थना का उपयोग करके विश्वासियों में प्रगतिशील पवित्रता का कार्य करता है। यूहन्ना 17:17। 2 थिस्सलुनीकियों 2:13। अंतिम पवित्रीकरण पवित्र आत्मा का कार्य है जो संतों को पूर्ण पवित्रता में पुष्ट करता है।

जब यीशु फिर से आएगा, इफिसियों 5:27, वह कलीसिया को अपने सामने परिपूर्ण और पवित्र के रूप में प्रस्तुत करेगा। मुझे इसे ठीक से समझना चाहिए। इसलिए, वह कलीसिया को बिना दाग या झुर्री या ऐसी किसी भी चीज़ के वैभव में अपने सामने प्रस्तुत कर सकता है, ताकि वह पवित्र और दोष रहित हो।

यह निश्चित रूप से होगा, क्योंकि यीशु ईश्वर-मनुष्य है जिसका प्रायश्चित ईश्वर ने स्वीकार किया था और जो मृतकों में से जीवित था। 1 थिस्सलुनीकियों 5:23-24 जोरदार ढंग से सिखाता है कि मसीह के दूसरे आगमन पर संपूर्ण पवित्रीकरण होगा। अब शांति का परमेश्वर स्वयं तुम्हें पूरी तरह से पवित्र करे।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने पर तुम्हारी आत्मा, प्राण और शरीर पूरी तरह से निर्दोष रहें। जो तुम्हें बुलाता है, वह विश्वासयोग्य है। वह अवश्य ही ऐसा करेगा।

पवित्रीकरण आरंभिक है। जब हम विश्वास करते हैं, तभी हम संत बनते हैं। यह प्रगतिशील या आजीवन है और यह अंतिम या संपूर्ण है।

चर्च पवित्र है क्योंकि परमेश्वर सामूहिक और व्यक्तिगत रूप से विश्वासियों में वास करने के लिए आता है। चर्च को समग्र रूप से देखते हुए, पॉल ने घोषणा की, परमेश्वर का मंदिर पवित्र है और आप वही हैं। 1 कुरिन्थियों 3:17। विश्वासियों के शरीर को मंदिर के रूप में देखते हुए, पॉल कहते हैं, क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है जो तुम में है, जिसे तुमने परमेश्वर से पाया है? 1 कुरिन्थियों 6:19। चर्च का पवित्रीकरण तीनों त्रित्ववादी व्यक्तियों का कार्य है।

यह परमेश्वर पिता का कार्य है, क्योंकि आत्माओं का पिता हमें हमारे लाभ के लिए अनुशासित करता है ताकि हम उसकी पवित्रता में भागीदार बन सकें। इब्रानियों 12:9 और 10. यह पुत्र का कार्य है, क्योंकि मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और उसे वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाने के लिए अपने आप को उसके लिए दे दिया।

इफिसियों 5.25.26. और पवित्रीकरण, बेशक, पवित्र आत्मा का कार्य है। जैसा कि पौलुस सिखाता है जब वह आत्मा द्वारा पवित्रीकरण और सत्य में विश्वास के माध्यम से उद्धार की बात करता है। 2 थिस्सलुनीकियों 2:13 . अपने महायाजकीय प्रार्थना में, यीशु ने पिता से चर्च को पवित्र करने के लिए कहा।

उन्हें अपने सत्य से पवित्र करो। तुम्हारा वचन सत्य है। यूहन्ना 17:17. कुछ लोगों के लिए, चर्च पवित्र है क्योंकि हमें परमेश्वर के लिए अलग रखा गया है और उसके संतों के रूप में गठित किया गया है, पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित किया गया है, परमेश्वर की सेवा के लिए समर्पित किया गया है, और उसके मार्गों पर चलते हैं।

मसीह की वापसी पर, चर्च पवित्रता में परिपूर्ण हो जाएगा: एकता, पवित्रता, सार्वभौमिकता, या कैथोलिकता। चर्च सार्वभौमिक या कैथोलिक है क्योंकि यह किसी एक स्थान या लोगों तक सीमित नहीं है।

इसके बजाय, यह पूरी धरती पर फैले परमेश्वर के सभी लोगों से बना है। चर्च की सार्वभौमिकता की जड़ें पुराने नियम की मिट्टी में परमेश्वर के वादों में गहरी जमी हुई हैं, जिसमें अब्राहम को सभी लोगों के लिए आशीर्वाद बनाने का वादा किया गया है। उत्पत्ति 12:3. और राष्ट्र 22:18. भविष्यवक्ता भविष्यवाणी करते हैं कि मसीहा राष्ट्रों की सेवा करेगा।

यशायाह 42:1-9. 49:1-7. 52:15. ये वादे पूरे होते हैं, और संकेत नए नियम में पूरे होते हैं। जब यीशु यहूदियों और अन्यजातियों के उद्धारक के रूप में आता है, तो परमेश्वर ने पूर्व से बुद्धिमान अन्यजातियों को उसके जन्म के बाद उसकी पूजा करने का निर्देश दिया। मत्ती 2:2. हालाँकि

यीशु पहले इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास आता है, मत्ती 15:24, वह एक कनानी महिला की भी सेवा करता है, आयत 21-28.

सामरी, यूहन्ना 4. यूनानी, यूहन्ना 12:20-26. विडंबना यह है कि यहूदी नहीं बल्कि सामरी लोग स्वीकार करते हैं कि यीशु, उद्धारण, दुनिया के उद्धारकर्ता हैं, यूहन्ना 4.42. यीशु का महान आदेश उनके विश्वव्यापी इरादों के बारे में कोई संदेह नहीं छोड़ता है। इसलिए जाओ और सभी राष्ट्रों के लोगों को शिष्य बनाओ। प्रेरित अपने प्रभु की आज्ञा मानते हैं और सभी राष्ट्रों को सुसमाचार सुनाते हैं और शिष्य बनाते हैं।

इस प्रकार सुसमाचार का प्रचार पहले यहूदियों को और फिर गैर-यहूदियों को किया जाता है, रोमियों 1:16। समय के साथ, यह चर्च की शिक्षा का एक स्थापित सिद्धांत बन गया। उद्धारण, पिता ने अपने बेटे को दुनिया के उद्धारकर्ता के रूप में, दुनिया के उद्धारकर्ता के रूप में भेजा है, 1 यूहन्ना 4:14। सुसमाचार के विश्वव्यापी प्रचार और कई देशों में चर्च की योजना के परिणामस्वरूप, चर्च दुनिया भर में फैल गया है। स्थानीय चर्च अधिकांश देशों में समुदायों में मौजूद हैं, और कुल मिलाकर यह दर्शाता है कि चर्च वैश्विक और बहुराष्ट्रीय है।

चर्च की कैथोलिकता का एक परिणाम यह है कि जातीय, नस्लीय या लैंगिक भेदभाव पापपूर्ण है। मैं इसे फिर से कहूंगा क्योंकि एक पवित्र और सार्वभौमिक चर्च है। जातीय भेदभाव पापपूर्ण है।

नस्लीय भेदभाव पाप है। और लिंग भेदभाव भी वैसा ही है। न केवल सभी मनुष्य परमेश्वर की छवि में बनाए गए हैं, बल्कि परमेश्वर अपने परिवार में हर जनजाति और भाषा और लोगों और राष्ट्र से लोगों को लाता है, प्रकाशितवाक्य 5 :9। प्रारंभिक ईसाइयों ने एक पवित्र कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च को स्वीकार किया।

प्रेरितत्व चर्च की चौथी और अंतिम विशेषता है। रोमन कैथोलिक मानते हैं कि एक पवित्र कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च का वर्णन केवल उनके चर्च पर लागू होता है। रोमन कैथोलिक चर्च का दावा है कि यह अकेला प्रेरितिक है क्योंकि प्रेरितों से लेकर बिशपों की एक सतत पंक्ति के प्रेरितिक उत्तराधिकार के कारण ऐसा हुआ है।

यह विशेष रूप से रोम के चर्च से संबंधित है, जिसका पहला बिशप रोम पीटर को मानता है। रोम मसीह को मानता है, पीटर को प्रेरितों का मुखिया बनाता है, और उसे पहला पोप भी चुनता है। धरती पर मसीह का प्रतिनिधि, धरती पर उसका पादरी।

प्रेरितिकता रोमन चर्च के वैध अधिकार, शिक्षा और संस्कारों की गारंटी देती है। इसके विपरीत, इंजीलवादियों का मानना है कि चर्च प्रेरितिक है क्योंकि यह पीटर सहित प्रेरितों के उपदेश और शिक्षा पर आधारित है। तो प्रेरितिकता नए नियम में पाए जाने वाले सुसमाचार के प्रति निष्ठा पर आधारित है।

वास्तव में, चर्च प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर बना है, जिसमें स्वयं मसीह आधारशिला है, इफिसियों 2.20। प्रारंभिक चर्च खुद को प्रेरितों की शिक्षा के लिए समर्पित करता है, जो परमेश्वर के वचन, प्रेरितों के काम 2:42 के अनुरूप है, जिसे प्रेरितत्व कहा जाता है। प्रेरितत्व

प्रेरितों के सिद्धांत के प्रति वफ़ादारी है, न कि रोमन कैथोलिक समन्वय के आधार पर रोम के बिशप से सीधे वंशानुक्रम। प्रेरितत्व परमेश्वर की सच्चाई के प्रति प्रेरितों की प्रतिबद्धता में परिलक्षित होता है।

दूसरा तीमुथियुस 3:14-4:4. पौलुस लिखता है, "मैं लज्जित नहीं हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि जिस पर मैंने विश्वास किया है, और मुझे विश्वास है कि वह उस दिन तक मेरी सौपी हुई चीज़ों की रक्षा करने में सक्षम है। मसीह यीशु में जो विश्वास और प्रेम है, उसके साथ जो खरी शिक्षा तुमने मुझसे सुनी है, उसे थामे रहो।" 2 तीमुथियुस 1:12-13. सुसमाचार सत्य है, और परमेश्वर का वचन सत्य है, इसलिए हमारे विश्वास, शिक्षाएँ और जीवन उसी पर आधारित हैं।

इसके अलावा, यीशु ने वादा किया कि वह और पिता शिष्यों के पास सत्य की आत्मा भेजेंगे, जो यीशु के बारे में गवाही देंगे और उन्हें सभी सत्य में मार्गदर्शन करेंगे, यूहन्ना 15:26 और 16:13। आत्मा ऐसा करती है, और परिणामस्वरूप, शिष्य और प्रेरित सुसमाचार पर विश्वास करते हैं और उसका प्रचार करते हैं, इसे अपने प्रेरितिक मंत्रालय के केंद्र में रखते हैं। पहला कुरिन्थियों 15:3-4। शास्त्रों के अनुसार, मसीह हमारे पापों के लिए मरा। उसे दफनाया गया।

शास्त्रों के अनुसार, वह तीसरे दिन फिर से जी उठा। मसीह ने भी पापों के कारण एक बार दुख उठाया, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने, कि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए, 1 पतरस 3:18। प्रेरित होना इतना गंभीर मामला है कि नए नियम के अनुसार, एक अलग सुसमाचार का प्रचार करना, चाहे स्वर्गदूतों या प्रेरितों द्वारा प्रचार किया जाए, प्रेरित के सिर पर परमेश्वर की ओर से शाप आता है, गलातियों 1:8-9। चाहे हम स्वर्ग से स्वर्गदूत भी हों, और प्रेरित होकर भी उस सुसमाचार के विपरीत जो हमने तुम्हें प्रचार किया है, तुम्हें प्रचार करना चाहिए, वह शापित हो। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही अब मैं फिर कहता हूँ, यदि कोई उस सुसमाचार के विपरीत जो तुम्हें प्राप्त हुआ है, तुम्हें प्रचार करता है, तो शापित हो।

जहाँ तक प्रेरित पौलुस का सवाल है, वह खुद को सुसमाचार के अधीन रखता है। वह केवल संदेशवाहक है, और उस पर तभी भरोसा किया जाना चाहिए जब वह परमेश्वर के सुसमाचार के संदेश के प्रति वफादार हो जो उसे प्रकट किया गया था। परमेश्वर के वचन का पौलुस जैसे प्रेरितों पर भी सर्वोच्च अधिकार है।

वास्तव में, नया नियम सभी शिक्षकों और प्रचारकों को परमेश्वर की सच्चाई को ग्रहण करने, उस पर विश्वास करने, उसकी रक्षा करने और उसे आगे बढ़ाने के लिए बाध्य करता है। उन्हें वचन का प्रचार करना है, समय और असमय तैयार रहना है, डांटना है, सुधारना है और बड़े धैर्य और शिक्षा के साथ समझाना है, 2 तीमुथियुस 4:1-3। इस प्रकार, हम आरंभिक चर्च के साथ स्वीकार करते हैं कि एक पवित्र कैथोलिक और प्रेरितिक चर्च है जिसे सुसमाचारी तरीके से समझा जाता है।

हमारे अगले व्याख्यान में, हम चर्च की विशेषताओं से आगे बढ़कर चर्च के चिह्नों के सुधारात्मक मामले पर चर्चा करेंगे। यह चर्च के सिद्धांतों और अंतिम चीज़ों को सिखाता है।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा चर्च के सिद्धांतों और अंतिम चीजों पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 8 है, चर्च का ऐतिहासिक धर्मशास्त्र, चर्च और चर्च, चर्च की विशेषताएँ।